दिनांक 18-09-1975 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

माया के चक्करों से परे, स्वदर्शन चक्रधारी ही भविष्य में छत्रधारी व फरिश्ता अर्थात् जिसका एक बाप के सिवा अन्य आत्माओं से कोई रिश्ता नहीं

संगम के अनमोल समय में स्वदर्शन चक्र चलाओ
आने वाले स्वर्णिम संसार में छत्रधारी कहलाओ

माया के अनेक चक्रों से अपने आपको बचाओ
चक्रधारी के संग संग खुद को छत्रधारी बनाओ

माया के अनगिनत चक्रों की कर लो तुम पहचान
हर चक्र के बन्धन का तुम मिटा दो नाम निशान

देहभान और व्यर्थ के संकल्पों का चक्र मिटाओ
अनेक जन्मों के स्वभाव संस्कार से मुक्ति पाओ

प्रकृति के सर्व प्रकार के आकर्षणों को मिटाओ
स्वदर्शन चक्र के सिवाय किसी चक्र में न आओ

अपने फरिश्ते रूप को फलक से स्मृति में लाओ
इस अलौकिक नशे की झलक चेहरे से दिखाओ

रूहानी खुशी से अपने मन में तुम नाचते जाओ
देह रूपी धरती पर अपने पांवों को ना टिकाओ

सारे दिन में अपना भीतर फरिश्ता रूप जगाओ
मृत्युलोक के मानव जीवन से रोज मरते जाओ

अगर किसी देह का रिश्ता यहाँ जोड़ते जाओगे
बाप से उस रिश्ते का प्यार हल्का पाते जाओगे

अलौकिक जीवन में हर रिश्ता बाप से निभाओ
कोई भाई कोई बहन इस जीवन में नहीं बनाओ

जितनी प्रीत जुटाई बाप से उतनी प्रीत निभाओ
किसी भी रिश्ते में प्रीत का प्रतिशत नहीं घटाओ